अंक - 23वां

वर्ष - 6वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

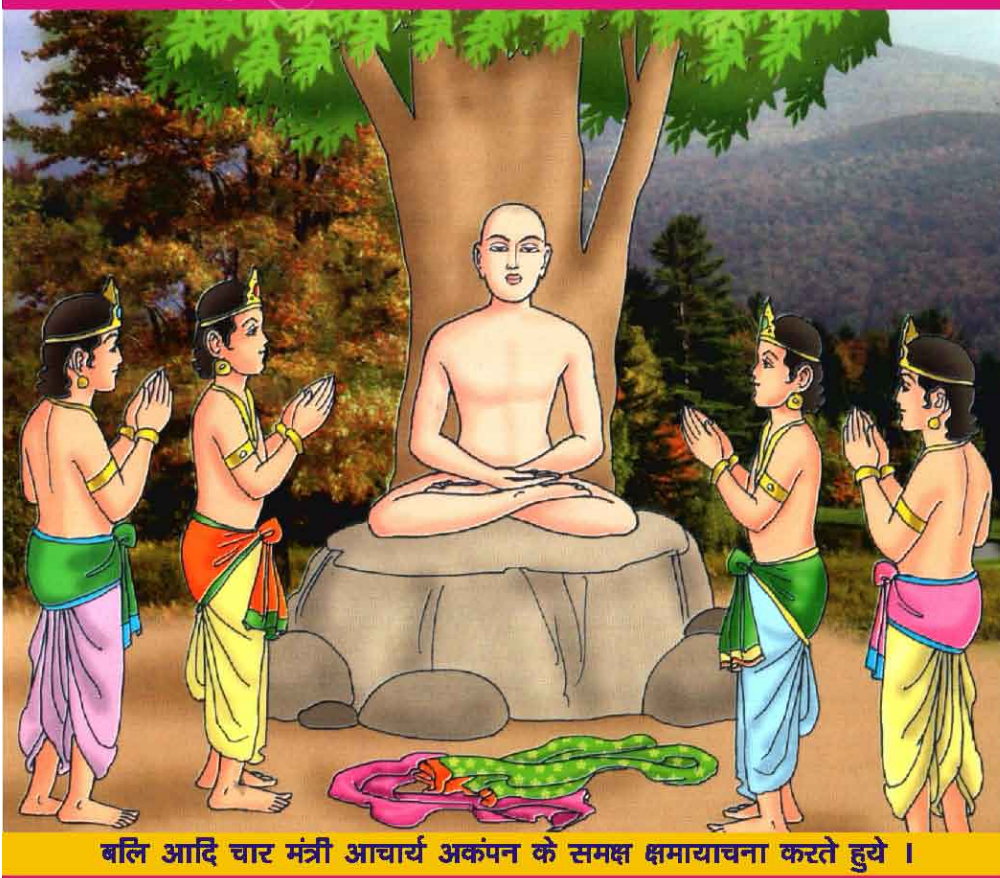

बलि आदि चार मंत्री आचार्य अकंपन के समक्ष क्षमायाचना करते हुये ।

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, (जबलपुर), देवलाली

प्रबंध संपादक
श्रीमति स्वस्ति जैन, देवलाली

प्रकाशकीय प्रबंधक
श्री मनीष जैन 'मंगलम्', जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 9373294684
chehaktichetna@yahoo.com

1.	संपादकीय / शिविर झलकियाँ	1
2.	कॉमिक्स	2
3.	क्रूरता कैसी–कैसी	3
4.	कर्म का विचित्रफल	4
5.	कमाल का हाथी	5-6
6.	फेस बुक	7-8
7.	शिविर की झलकियाँ	9
8.	मेरी पनिहार यात्रा	10-11
9.	स्कूल जाते समय रखें सावधानी	12
10.	आयु कर्म की विचित्रता	13
11.	संकल्प	14
12.	कविताएँ	15
13.	भक्तामर स्तोत्र	16-17
14.	संविधान में जैनों का योगदान	18-19
15.	विदेशों में जैन साहित्य	20-21
16.	रक्षा बंधन	22-23
17.	वेश का महत्व	24
18.	परिणामों की विचित्रता	25
19.	समाचार कोना	26-28
20.	जन्म दिवस	29-30
21.	कॉमिक्स	31-32

सदस्यता शुल्क – 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क.- 1937000101030106

संपादकीय

प्यारे बच्चो!

आपको मेरा ढेर सारा प्यार और जय जिनेन्द्र। आपकी गर्मी की छुट्टियां समाप्त हो गई होंगी और आपके स्कूल खुल गये होंगे। गर्मियों में छुट्टियों का सदुपयोग आपने कैसे किया ?– आप हमें पत्र अथवा ईमेल द्वारा अवगत कराना। आपके पत्र को हम पत्रिका में प्रकाशित करेंगे। हाँ अब स्कूल की पढ़ाई मन लगाकर व्यवस्थित रूप से करना। पढ़ाई नियमित रूप से करना जिससे आपको विषय तैयार होते जायेंगे और परीक्षा के समय आपको डर भी नहीं लगेगा। थोड़ा समय आप अपने महान जैन शासन को समझने का भी निकालना। जीवन में इससे महत्वपूर्ण कार्य कुछ भी नहीं। प्रतिदिन जब भी समय मिले आप प्यारे जैन शासन के महापुरुषों की कहानी जरूर पढ़ना। इससे आपको समस्याओं को जीतने की प्रेरणा मिलेगी और आत्म संबल भी बढ़ेगा।

हमें अनेक लोगों से मालूम हुआ कि बहुत सारे बच्चों ने बाजार के पारले, ब्रिटानिया – जैसे बिस्किट और टॉफी–चॉकलेट का त्याग कर दिया क्योंकि ये मांसाहारी होते हैं। आपके लोगों के इस साहस और स्वयं के कल्याण की भावना को मेरा नमन। आप अपने नियम पर दृढ़ रहना। लोग आपको गलत समझाने का प्रयास करेंगे आपका नियम तुड़वाने का प्रयास करेंगे परन्तु आप अपने सिद्धान्त पर डटे रहना। हम आपको समय– समय पर नई जानकारी देते रहेंगे। आप इस पत्रिका का आनंद लीजिये हम फिर मिलेंगे नये अंक के साथ –

आपका विराग

शिविर की झलकियाँ

क्या आप भी जिम्मेदार हैं

आपके चेहरे के श्रृंगार और सुन्दरता के लिये बनने वाले सौन्दर्य प्रसाधन (Cosmatics, Cream, Shampu, Etc.) की जांच करने के लिये इन जानवरों पर परीक्षण किया गया। परीक्षण के बाद इनकी ये हालत हो गई। यदि आप हिंसा से बनने बनने वाले इन सौन्दर्य प्रसाधन का प्रयोग करते हैं तो इनकी इस हालत के जिम्मेदार क्या आप नहीं हैं............. !

कर्म की विचित्रता

देखो ! पापों के फल में कैसी पर्याय मिली ?

सावधान पापों से बचिये.......

पाकिस्तान में जन्मा यह बालक। इस बालक के 6 पैर हैं। मनुष्य पर्याय मिली तो भी किस काम की ...

भारत में जन्मी 6 पैर की बालिका। काश! मैंने अपने पैरों का सदुपयोग किया होता ...

सिर से जुड़ी दो बहनें। अधिक मोह का फल...।

सिर से जुड़े से दो बालक। काश! मैंने व्यक्ति से नहीं आत्मा से राग किया होता...।

कमाल का हाथी

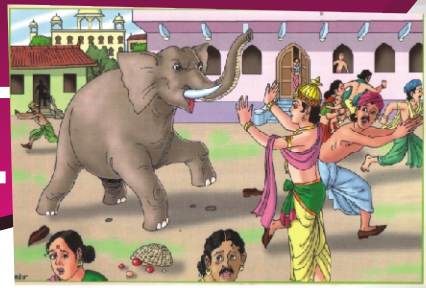

अयोध्या के राजा राम के छोटे भाई भरत शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। संसार के सारे भोग–वैभव पाकर भी उनका चित्त वैराग्य से भरपूर था। जैसे पिंजरे में कैद शेर भोजन की सारी सुविधा होने पर भी कष्ट का अनुभव करता है वैसे ही भरत सारी सुविधा पाकर के भी आत्म अनुभव के बिना कष्ट का अनुभव करते थे। एक दिन भरत ने दिगम्बर दीक्षा लेने का निर्णय किया, परन्तु उनकी मां कैकई ने मोह के कारण उन्हें दीक्षा लेने से रोक दिया।

कुछ दिन बाद उन्होंने पुनः बड़े भाई राम से कहा कि भ्राता! मैंने आपके और मां के कहने पर दीक्षा नहीं ली थी, परन्तु अब मैं जैनेश्वरी दीक्षा लेना चाहता हूँ। जैसे हमारे पिता दशरथ ने मुनि दीक्षा अंगीकार की थी मैं भी वैसा ही करना चाहता हूँ। भरत को रोकने के लिये लक्ष्मण और घर की महिलाओं ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया। वे उनका मन परिवर्तन करने के लिये सरोवर में ले गये। परन्तु भरत ने शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहनकर जिनेन्द्र भगवान की पूजा की। तभी त्रैलोक्यमंडन नाम के हाथी ने सारे बंधन तोड़ दिये और नगर का दरवाजा तोड़ दिया। यह हाथी रावण का था, लंका विजय के बाद राम इसी हाथी पर बैठकर अयोध्या आये थे। वह अत्यंत क्रोधित होकर पूरे नगर में उत्पात करता हुआ भरत के सामने आ गया। उसने जैसे ही भरत को देखा वह शांत हो गया। उसे अपना पूर्व भव स्मरण

आ गया। वह विचारने लगा कि अरे! यह भरत तो मेरा परम मित्र है। छठवें स्वर्ग में हम दोनों साथ थे। पुण्य उदय से मेरा मित्र उत्तम पुरुष हो गया और कुटिल परिणामों के कारण मैंने हाथी की पर्याय में जन्म लिया। वह हाथी अत्यंत शांत भाव से भरत के सामने बैठ गया। अनेक महावतों ने उसे उठाने का प्रयास किया तब भी वह नहीं हिला। उस त्रिलोकमण्डन हाथी ने अन्न–जल का त्याग कर दिया।

तभी उस महेन्द्रोदय वन में भगवान देशभूषण और भगवान कुलभूषण अपने समवशरण सहित पधारे। राजा राम अपने भाईयों और मंत्रियों के साथ दोनों भगवान के दर्शन करने के लिये वहाँ गये। राजा राम ने उस हाथी के घटना के बारे में पूछा तो भगवान ने बताया कि यह त्रैलोक्यमण्डन हाथी और भरत में कई जन्मों से मित्रता चली आ रही है। इसके पूर्व भी ये दोनों देव पर्याय में अच्छे मित्र थे और दोनों अल्पकाल में अपना कल्याण करेंगे।

भगवान की सुनकर हाथी अत्यंत हर्षित हुआ उसने समवशरण में व्रत अंगीकार किये और श्रावक बन गया। भरत को वैराग्य हो गया वे मुनि हो गये। यह देखकर भरत की मां कैकई बहुत दुःखी होने लगी। तब राम के समझाने पर उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और विरक्त होकर पृथ्वीमति माता के पास जाकर तीन सौ अन्य स्त्रियों के साथ आर्यिका दीक्षा ले ली।

वह त्रिलोकमण्डन हाथी उपवास करने लगा। उपवास के समाप्त होने पर सूखे पत्ते खाने लगा, वह गांव में जाकर शुद्ध खान–पान करता था, देखकर चलता था। इस तरह बाद में भोजन का पूर्ण त्यागकर वह समाधिमरण पूर्वक छठवें स्वर्ग में देव हुआ और भविष्य में वह मोक्ष जायेगा। इधर भरत ने आत्मा की अनुपम साधना करके मोक्ष पद को प्राप्त किया।

फेसबुक सुविधा या परेशानी

फेस बुक अर्थात् इंटरनेट के द्वारा जाने – अनजाने लोगों से संपर्क बनाये रखने का आधुनिक माध्यम। इसे दुनिया का तीसरा बड़ा देश कहा जाने लगा है। हमारे चाहने अथवा न चाहने पर भी यह हमारे घरों और बच्चों को अपना दीवाना बना चुका है और माता–पिता इससे पूरी तरह अनजान। इंटरनेट का प्रयोग करने वालों के लिये फेसबुक का प्रयोग बहुत आसान हो गया है। आज पूरे विश्व में फेसबुक के नब्बे करोड़ लोग सदस्य बन चुके हैं। इसमें 3 वर्ष के बच्चों से लेकर 80 वर्ष तक के वृद्ध शामिल हैं। इसमें 75 लाख बच्चे 13 वर्ष से कम उम्र के हैं और 50 लाख बच्चे तो 10 वर्ष से कम उम्र के हैं।

फेस बुक इंटरनेट की एक सोशल नेटवर्किंग बेवसाइट है। इसका सदस्य इस बेवसाइट में अपनी फोटो, अपना परिचय, अपने विचार परस्पर अपने मित्रों से शेयर करते हैं। इसमें कई ऐसी बातें होती हैं जो परिवार से शेयर नहीं करते परन्तु फेसबुक पर डाल देते हैं। फेसबुक दुनिया के बदमाशों और अपराधियों का अड्डा बनता जा रहा है। इसमें अपनी व्यक्तिगत बातें शेयर करने के उकसाया जाता है। अधिकांश बच्चे या युवा यह नहीं जानते कि कौन सी बातें बताने लायक हैं और कौन सी नहीं ? पिछले फरवरी माह में अमेरिका के नार्थ केरोलिना के एक व्यक्ति को अपनी बेटी के फेस बुक के बारे में पता चला। उसकी बेटी ने अपनी व्यक्तिगत और भावनायें फेस बुक पर लिखीं थीं। उसने अपने पिता के बारे में लिखा कि मैं अपने पिता के तानों से परेशान हो गई हूँ। जब उसके पिता ने यह बात पढ़ी तो उसे इतना गुस्सा आया कि उसने बेटी के लेपटॉप पर अपने रिवाल्वर से 8 गोलियां दाग दीं।

मध्यप्रदेश के एक प्रसिद्ध नगर में एक जैन लड़की ने अन्य जाति वाले लड़के के साथ भागकर मंदिर में विवाह कर लिया और विवाह के आधे घंटे बाद अपने विवाह की फोटो फेस बुक पर डाल दीं जिससे उसके परिवार को भारी शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा।

आज लड़के अपने बारे में गलत जानकारी देकर लड़कियों से फेस बुक के जरिये संपर्क बना रहे हैं और लड़की की जानकारी लेकर

उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। लड़कियाँ भी अपने निजी फोटो फेसबुक पर भेजती है, जिसका फायदा उठाकर अपराधी किसी भी घटना को अंजाम दे रहे हैं।

कई किशोरों के लिये फेस बुक पर अधिक से अधिक मित्र जुटाना गर्व की निशानी बन गया है। जिसके जितने ज्यादा मित्र वह उतना ही घमंड से अपना सिर ऊँचा करके चलता है। अधिक से अधिक दोस्त बनाने की दौड़ में अनजाने व्यक्तियों से संपर्क हो जाता है जिन्हें वह जानता भी नहीं। दिल्ली के एक युवक ने एक लड़की से फेसबुक पर अपनी बातों के जाल में फंसाकर उससे उसकी व्यक्तिगत जानकारी और फोटो ले ली। बाद में उस युवक ने फोटो को गलत प्रयोग कर उस लड़की को ब्लेकमेल किया और काफी धन उससे लूट लिया।

दक्षिण–पूर्व आस्ट्रेलिया के बुडानून शहर में एक 17 वर्षीय लड़की ने अपनी दादी की राशि गिनने में सहायता की। इसने इस बड़ी राशि की फोटो मोबाइल से खींचकर फेस बुक के अपने पेज पर अपलोड कर दी। कुछ लुटेरों ने ये फोटो देखीं और फेस बुक से उस लड़की का पता लिया और फोटो अपलोड करने के मात्र 4 घंटे बाद ही वे लुटेरे आये और लड़की की दादी को घायल कर सारे रूपये और अन्य सामान लूटकर ले गये।

(दैनिक समाचार पत्र – राज एक्सप्रेस, ग्वालियर संस्करण 30 मई 2012)

उपयोग करें पर रहें सावधान - फेस पर रोक लगाना संभव नहीं है। लेकिन उसका प्रयोग करने हम स्वाधीन हैं। फेस बुक से कई ज्ञानवर्धक बातों की जानकारी मिलती है। कई बिछड़े दोस्तों से मुलाकात हो जाती है। आप फेसबुक का उपयोग करें परंतु निम्न सावधानी रखें।

1. अनजान लोगों को अपने फ्रेंडस क्लब में शामिल न करें।
2. अपनी व्यक्तिगत और गोपनीय बातों को फेस बुक पर शेयर न करें।
3. माता–पिता अपने बच्चों पर पूरी नजर रखें।
4. अच्छे विचारों और जानकारियों का आदान–प्रदान करें।
5. फेस बुक को व्यसन न बनने दें।
6. जिन मित्रों से आपत्तिजनक जानकारी और संदेश प्राप्त हों उन्हें तुरन्त अपने दोस्तों की सूची से अलग कर दें।

आप सावधान रहें। आपकी जरा सी लापरवाही आपको संकट में डाल सकती है। **– विभिन्न समाचार पत्रों से संकलित**

शिविर का चमत्कार

जय जिनेन्द्र मम्मी।
अरे आशी ! तुम शिविर से लौट आई।
हां मम्मी ! आ गई।
कैसा रहा शिविर ? बहुत अच्छा। मम्मी! इतना आनंद आया कि पूछो मत। वहॉ बहुत सारे पंडितजी आये थे। सबने अपने प्यारे जैन धर्म की बहुत सारी बातें बताई। सुबह योग और प्रार्थना, फिर पूजन, फिर नाश्ता, फिर कक्षायें। बस मम्मी पूछो मत। पता नहीं 8 दिन कैसे निकल गये..

बस बाबा बस। थक गई होगी। जल्दी से हाथ धो लो। मैंने तेरे पसंद की आलू की सब्जी बनाई है और आम का अचार भी रखा है।

नहीं मम्मी! अब आलू की सब्जी बंद और पुराना अचार भी नहीं चलेगा।

क्या मतलब ? तुम तो आलू की सब्जी के बिना एक दिन भी नहीं रह सकती और क्या अचार के बिना तुम स्कूल टिफिन ले जाओगी.....

हॉ ले जाउंगी। मम्मी आपको पता है कि आलू के कण–कण में अनंत जीव होते हैं। इसको खाने से भयंकर पाप लगता है।

अच्छा और अचार में क्या परेशानी है मेरी प्यारी बेटी।

अरे मम्मी! अचार हमें ताजा ही खाना चाहिये। अचार एक दिन का ही अच्छा होता है। दूसरे दिन तो उस अचार में अनंत जीव उत्पन्न हो जाते हैं।

अच्छा बेटा! ठीक है। अब तुम आलू और अचार नहीं खाना।

नहीं मम्मी! ऐसे काम नहीं चलेगा। अब तो घर में ही आलू – प्याज जमीकंद सब्जी नहीं आयेगी। वरना मैं भोजन नहीं करूंगी।

(शाम के समय आशी के मम्मी पापा अकेले बैठकर बातें कर रहे हैं।)

आपको पता है आशी ने शिविर से नियम लिया है वह आलू –प्याज जमीकंद सब्जी नहीं खायेगी।

इतनी सी बच्ची ने इतनी हिम्मत से नियम ले लिया और हम इतने बड़े होकर नियम नहीं ले पाये।

तो अब क्या करोगे ?

करना क्या है ? बेटी के सामने आलू – प्याज खाते समय मुझे बहुत शर्म आयेगी। मैं तो कल ही जिनमंदिर जाकर भगवान के सामने श्रीफल चढ़ाकर समस्त जमीकंद का त्याग कर दूंगा।

(जबलपुर बाल संस्कार के पश्चात आशी के पिता श्री मनीष जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार)

मेरी रोमांचकारी पनिहार यात्रा

इस वर्ष श्रुत पंचमी महापर्व के अवसर पर ग्वालियर जाने का प्रसंग बना। लाला के बाजार स्थित इस कार्यक्रम में मेरे साथ वरिष्ठ विद्वान श्री गुलाबचंदजी बीना भी थे। हम दोनों ने ही समयसारजी ग्रन्थराज पर स्वाध्याय किया। इस मंदिर के व्यवस्थापक श्री श्यामलालजी विजयवर्गीय हैं। श्री श्यामलालजी मूल रूप से ब्राहाण हैं परन्तु लगभग 40 वर्ष पूर्व गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के संपर्क में आने के बाद पूरे परिवार सहित दिगम्बर जैन धर्म अंगीकार कर लिया। वर्तमान में इस परिवार में 50 सदस्य हैं। इनका पूरा परिवार संगीत कला में पारंगत है। जिनेन्द्रभक्ति के समय पूरे परिवार की जुगलबंदी और प्राचीन भक्तियों का शास्त्रीय रूप सुनकर मैं अपने को धन्य अनुभव करता था। लगभग 75 वर्षीय श्री श्यामलालजी इस उम्र में भी कमाल के स्वर और आलाप से भक्ति करते हैं। इनकी प्रेरणा और उत्साह से ग्वालियर के अनेक जिनमंदिरों के दर्शन का लाभ मिला।

दिनांक 30 मई को वे ग्वालियर से लगभग 20 किमी दूर पहाड़ी पर स्थित पनिहार ग्राम में ले गये, यहाँ 600 वर्ष पुराना एक दुर्लभ जिनमंदिर है। कहा जाता है कि इस लगभग 300 वर्ष पूर्व इस ग्राम के चारों ओर नदियां थीं जो कि हार के आकार की थीं। इसलिये इसका नाम पनिहार पड़ा। संभवतः यहाँ ज्वालामुखी जैसी किसी प्राकृतिक आपदा के कारण सारी बस्ती नष्ट हो गई परन्तु चमत्कारिक बात यह रही कि जिनमंदिर पूरी तरह सुरक्षित रहा। आज भी यहाँ के पत्थरों में लोह तत्त्व की अधिक मात्रा पाई जाती है। यहाँ एक भट्टारक मठ भी था। यहाँ अनेक मुनियों द्वारा जिन शास्त्रों की रचना हुई।

जैसे ही यहाँ के प्रबंधक श्री संजय ने जिनमंदिर का द्वार खोला हम आश्चर्यचकित रह गये। इस निर्जन स्थान मंदिर के बाहर एक चर्तुमुखी जिनप्रतिमा के दर्शन हुये। जब हमने इस मनोहारी प्रतिमा के संदर्भ में जानकारी ली तो पता चला कि समीप ही सरकार द्वारा रेल्वे लाईन बिछाने के लिये खुदाई की जा रही थी। तब खोदते समय पाषाण और मारबल की 12 दिगम्बर जिनप्रतिमायें मिलीं थीं। संजयजी ने एक गुफा जिसे भौंरा कहा जाता है की चर्चा की और अंदर एक जिनमंदिर की

चर्चा की। मुझे यह गुफा देखने की इच्छा हुई क्योंकि इस भौंरे में ही पहले अनेक जिनप्रतिमायें विराजमान थीं। अंदर के कमरे में जाकर देखा तो एक जमीन के नीचे कई फुट नीचे एक पतला सा रास्ता था। जो मंदिर के शिखर से तीन मंजिल नीचे था। इतना संकरा रास्ता देखकर तो विश्वास ही नहीं हुआ कि यहां कोई मंदिर भी हो सकता है। पहले तो हिम्मत ही टूट गई परन्तु पूर्वज जैनों द्वारा किये गये कार्य की महिमा आई तो तुरंत हम जाने को तैयार हो गये। लगभग डेढ़ फुट पतले रास्ते से हम मोबाइल टार्च लेकर नीचे उतरे। अंदर अंधेरा था। जैसे–तैसे बैठकर या लेटकर आगे बढ़ रहे थे। कच्ची दीवारें होने के कारण मिट्टी भी गिर रही थी। एक अजीब सी गंध भी आ रही थी। लगभग 6 मिनिट का सफर तय करके हम जैसे ही अंदर पहुंचे तो देखकर आश्चर्य का ठिकाना न रहा, अंदर एक छोटी सी जगह पर बहुत सुंदर पत्थर की गुंबद थी। जिस पर डिजाइन की गई थी। ऊपर कई चमगादड़ लटकी हुई थीं। दीवार में छोटी– बड़ी चार वेदियां बनी हुई थीं जिससे मालूम पड़ता था कि पहले के राजाओं ने या साधर्मियों ने किसी आपदा से बचने के लिये सुरक्षित स्थान बनाया था और आवश्यकता पड़ने पर यहां प्रतिमायें भी विराजमान की थी। हम यह नहीं समझ ही नहीं पा रहे थे कि जिस स्थान के अंदर जाने में हमें इतनी समस्या हुई, उस स्थान पर कैसे इतना सुन्दर निर्माण कार्य किया होगा ? जो भी हमने मन ही जिनधर्म पर श्रद्धा रखने वाले उन महापुरुषों को नमन किया और जिस स्थान पर भगवान विराजमान थे उस स्थान की मिट्टी को माथे पर लगाया और णमोकार मंत्र का पाठ कर लौट आये।

इस मंदिर के पास कुछ दूरी पर एक और विशाल जिनमंदिर और है। इस जिनमंदिर में 22 फुट उंची 4 तीर्थकरों की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमायें विराजमान हैं। परन्तु जिनमंदिर के चारों ओर जंगल है, चारों ओर कहीं भी रास्ता नहीं है। कहा जाता है पूरे क्षेत्र की भूमि जिनप्रतिमाओं से भरी हुई है। धन्य है जैन शासन और जिनधर्म पर अटल श्रद्धा रखने वाले साधर्मी सेवक।

आपको जब भी अवसर मिले आप अवश्य इस पनिहार जिनालय के दर्शन का लाभ लें।

– विराग शास्त्री

पनिहार का संपर्क सूत्र
09425764448, 9826216874, 9425700065

स्कूल जाते समय रखें

सावधानियाँ

1. पानी की बोतल में ताजा पानी छानकर भरें और बोतल में एक लोंग या थोड़ी सी सौंप डाल लें जिससे आपका पानी 6 घंटे तक अनछना नहीं होगा।
2. स्कूल में अपने टिफिन का ही भोजन करें दूसरे का भोजन न करें। हो सकता उसके टिफिन में आलू–प्याज आदि अभक्ष्य वस्तुयें हों।
3. आप अच्छे और संस्कारित बच्चों को दोस्त बनायें जिससे आपकी सोच का और आपका विकास होगा।
4. स्कूल के गार्डन के अथवा रास्ते में लगे हुये पौधों अथवा फूलों को नुकसान न पहुँचायें, न ही उन्हें तोड़ें। यह हिंसा का पाप है।
5. स्कूल की किसी भी चीज को अपने अध्यापक से बिना पूछे न लायें और न ही किसी छात्र की कोई वस्तु को लायें।
6. विद्यालय में मन लगाकर पढ़ें। अध्यापक की प्रत्येक बात को ध्यान से सुनें।
7. विद्यालय से लौटकर अपने कपड़े, जूते–मोजे, टाई, आई कार्ड, स्कूल बैग सही स्थान पर रखें।
8. मोजे जूते से बाहर रखें। जूते के अंदर रखने से उनमें बदबू आने लगती है।
9. अपना होमवर्क उसी दिन पूरा करने का प्रयास करें ताकि स्कूल में मिलने वाले दण्ड से आप बच सकें।
10. अपनी पढ़ाई के बारे में तथा स्कूल में कोई भी खास बात हुई हो या कोई घटना हुई हो तो अपनी मम्मी को अवश्य बतायें।

आयु कर्म की विचित्रता

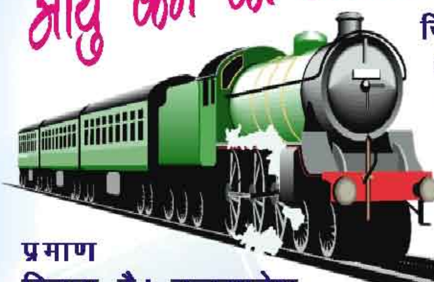

जिनेन्द्र देव ने कहा है कि जिसकी आयु शेष है उसे कोई नहीं मार सकता और जिसकी आयु समाप्त हो गई उसे कोई भी चमत्कार नहीं बचा सकता।

इसका प्रमाण इन दो सत्य घटनाओं से मिलता है। उत्तरप्रदेश के फिरोजाबाद रेल्वेस्टेशन के पास की पटरी पर एक पति अपनी पत्नी के साथ जा रहा था। पत्नी अपने 3 माह के बेटे को गोद में लेकर चल रही थी। थोड़ी दूर चलने पर पत्नी थक गई तो पति ने पत्नी से बेटे को अपनी गोद में ले लिया और बेटे को लेकर पति आगे चलने लगा और पत्नी पीछे। तभी एक सुपरफास्ट ट्रेन सामने से आई और बहुत तेजी से निकल गई। थोड़ी दूर चलने के बाद पति ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे कहीं भी पत्नी दिखाई नहीं दी। वह घबराकर वापस आया तो उसे रास्ते में कहीं – कहीं मांस के टुकड़े मिले। थोड़ी और आगे जाने पर उसे अपनी पत्नी की साड़ी का हिस्सा मिला। उसने घबराकर पुलिस को खबर की। पुलिस ने काफी खोजबीन की परन्तु उसकी पत्नी के कुछ अंग तो मिले और शेष अंगों का पता ही नहीं चला। अंततः निष्कर्ष यह निकला कि उसकी पत्नी ट्रेन से कट गई और तेज हवा ने उसके सारे अंगों को यहाँ–वहाँ कर दिया। घटना के 1 मिनिट पहले ही अपने बेटे को अपने पति को सौंपने वाली पत्नी को नहीं पता था कि उसकी आयु समाप्त होने वाली है।

– विपिन शास्त्री, फिरोजाबाद

दूसरी घटना उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ की है। रेल्वे स्टेशन पर काफी भीड़ थी। रेल्वे की ओर से लगातार घोषणा की जा रही थी कि एक तेज गति की न रुकने वाली सुपरफास्ट ट्रेन यहाँ से गुजरने वाली है। कृपया यात्री पटरी से दूर रहें। लगभग 50 वर्ष की एक महिला ने इस घोषणा को नहीं सुना और रेल्वे की पटरी पार करने लगी। तभी उसकी बेटी ने देखा कि एक ट्रेन बहुत तेज गति से चली आ रही है। उसने अपनी मां को आवाज लगाई परन्तु स्टेशन पर भीड़ अधिक होने से उसकी आवाज मां के कानों तक नहीं पहुंच पाई। मां की जान बचाने के लिये बेटी पटरी पर तेजी से कूदी और अपनी मां को पटरी के उस पार धक्का दे दिया। मां झटका खाकर दूसरी ओर गिरी और बेटी ट्रेन से बचने के लिये वापस पलटी लेकिन तेज गति से आ रही ट्रेन की टक्कर उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े हो गये। देखो ! कर्म के उदय की विचित्रता

– द्वारा मंगलार्थी अनाकुल जैन, जसवंतनगर (उ.प्र.)

संकल्प

नन्हे मुन्ने बच्चे मिलकर, ऐसी फौज बनायेंगे।
प्राण की बाजी आ जाये पर, धर्म की लाज बचायेंगे।

महावीर और कुन्दकुन्द जो आज नहीं हैं देश में,
बच्चे हम संतान उन्हीं की, रहें किसी भी भेष में।
जिनवाणी की शरण में आकर, तत्वज्ञान प्रगटायेंगे ।।1।।
प्राण की बाजी...............

चेतन काया भिन्न-भिन्न है, स्व पर भेद प्रगटायेंगे,
काया नश्वर मैं अविनश्वर, आतम ज्योति जगायेंगे।
निज आतम में रम-जमकर, हम स्वयं सिद्ध बन जायेंगे।। 2।।
प्राण की बाजी...............

सत्-समागम लाभ मिला है, उसका लाभ उठायेंगे,
सिद्ध प्रभु के साथ रहकर, अनंत काल सुख पायेंगे।
यही हमारी ध्येय ध्वजा है, हम इसको फहरायेंगे।। 3।।
प्राण की बाजी...............

-ब्र.सुमतप्रकाश जी से प्राप्त

पापड़

पापड़ आया पापड़ आया
सबको यह संदेश सुनाया
बाजार के पापड़ कभी न खाना,
वह होता पापों का खजाना।
घर का बना पापड़ ही खाना,
ज्यादा दिन के कभी न खाना।
पापों से भाई, बचकर रहना।
बन जाओ प्यारे से जैना।।

- रचनाकार -विराग शास्त्री

दो का पहाड़ा

दो एकम दो — राग – द्वेष को खो।
दो दूनी चार — करो आतम से प्यार।
दो तिया छः — करो कर्मों का क्षय।
दो चौके आठ — हो जिनवाणी का पाठ।
दो पंजे दस — करो मन इन्द्रिय को वश।
दो छक्के बारह — भाओ भावना बारह।
दो सत्ते चौदह — पार करें गुणस्थान चौदह।
दो अठ्ठे सोलह — झुकाओ जिनवर को शीश।
दो नवें अठारह — भगें दोष अठारह।
दो दशम बीस — भागें कषाय सोलह।

आचार्य मानुतंग रचित

भक्तामर स्तोत्र

हिन्दी एवं अंग्रेजी पद्यानुवाद स्व. चक्रेश्वर प्रसाद जैन, नकुड़ (उ.प्र.)

इसके पूर्व के अंकों में 36 छन्दों का हिन्दी – अंग्रेजी अनुवाद पढ़ चुके हैं, अब आगे –

37

धर्मोपदेश समय जो विभूति पाई गई तुझमें जिनराज,
अन्य देव की शिक्षा में नहिं होती ऐसी सिरताज।
प्रखर ज्योति जैसी रखता है अन्धकार हरणार्थ दिनेश,
तारागण की कब हो सकती नभ में ऐसी कान्ति देव।।

Marvel, that is in thy precepts,
is not found in other god,
stars, though shine in the firmament,
Possess not the Sun's splendour.

38

युगल कपोलों से जिसके हो बहती मद की धारा नाथ,
लक्ष भ्रमर गूंजत रह जिसके सर पर मस्त हो इक साथ।
यदि ऐसा हाथी भी धावे क्रोधित होकर मृत्यु समान,
किन्चित भय उपजे ना तो भी आश्रित के मन में भगवान।।

Foam falling fat from both the cheeks,
lacs of bees humming about,
Elephant, charging furiously,
Thy devotees cannot harm.

39

गज अनेक के कुम्भ चीरकर, रक्त से लिपटे मुक्ता के,
बना दिया हो कहीं बढ़कर रमणीक भूमि को उपवन से।
ऐसा मृगपति भी नहिं उन पर कर सकता है कदाचित वार,
तेरे चरण कमल गिरि के आश्रित जग में जो नर–नार।।

Foreheads of lacs of elephants,
The tiger who has wounded,
And with pearls decorted earth,
Cannot harm thy devotees.

40

प्रलयकाल की अग्नि तुल्य जो उत्तेजित हो दावानल,
अर समान तक जिसकी ज्वाला उठती हो वायु के बल।
विश्व भस्म करने जब सम्मुख आती वेग से ऐसी आग,
तव कीर्तनरूपी जल से सब उष्णता उसकी जाती भाग।।

Fire cxcited by doom's - day winds,
Throwing flomes up to the sky,
Advances to burn Universe,
Is extinguished by thy name.

41

कोकिल कण्ठ समान हो, नीला रक्त तुलय हों लाल नयन,
कोधोन्मत हो नाग विषैला धावै शीश उठा कर फन।
अहिदमनी तव नाम की भगवन जिसके मन में करती वास,
पांव तले आ जाये नाग से पहुंचे न फिर भी कुछ भी त्रास।।

with blood - shot eyes, neck like cuckoo,
With raised head charges fiercely,
Such a cobra thy devotee,
No doubt brings under his feet.

42

रण क्षेत्र में हाथी घोड़े करते हों जब भीषण नाद,
शक्तिशाली राजाओं की हों सेनायें कर रहीं सिंहनाद।
नाम सुमरते ही तेरा मिट जाये संकट यह तत्काल,
ज्यों तम वृन्द दूर हो जावे सूर्य निकलते ही जगपाल।।

Fiery horses, mad elephants,
That produce terrible noise,
And the King's armies, all vanish,
By thy name as gloom by sun.

To Be Continued....................

संविधान सभा में जैन

भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ । संविधान सभा लगभग 3 वर्ष । (2 वर्ष, 11 महीने, 17 दिन) कार्यरत रही । संविधान सभा में लगभग 350 सदस्य थे । 6 जैन सदस्य भी थे ।

श्री अजित प्रसाद जैन, सहारनपुर
श्री बलवंत सिंह मेहता, उदयपुर
श्री भवानी अर्जुन खीमजी, कच्छ
श्री कुसुमकान्त जैन, इन्दौर
श्री रतनलाल मालवीय, सागर
श्री चिमन भाई चकु भाई शाह, सौराष्ट्र

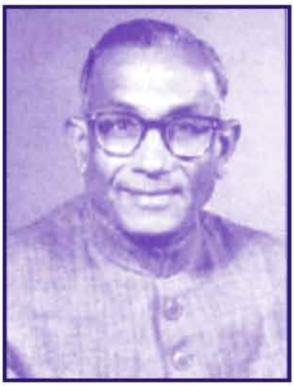

श्री अजित प्रसाद जैन, सहारनपुर

श्री कुसुमकान्त जैन, इन्दौर

श्री बलवंत सिंह मेहता, उदयपुर

श्री रतनलाल मालवीय, सागर

जैन शहीद - 2

अन्य जैन शहीद हैं - सिंघई प्रेमचंद जैन, दमोह (म.प्र.), साताप्पा टोपण्णवर, कड़वी शिवपुरी (बेलगाम), कर्नाटक, उदयचंद जैन, मण्डला (म.प्र.),साबूलाल वैशाखिया, गढ़ाकोटो (म.प्र.), कु. जयावती संघवी, अहमदाबाद (गुजरात), नाथालाल शाह, अहमदाबाद (गुजरात), अण्णा पन्नावले, सांगली (महाराष्ट्र), मगनलाल ओसवाल, इन्दौर (म.प्र.), भूपाल अणस्कुरे, ङ्क्िकपुर्ली (कोल्हापुर),महाराष्ट्र,कन्धीलाल जैन, सिलौण्डी (जबलपुर) म.प्र., मुलायमचंद जैन, जबलपुर (म.प्र.), चौ. भैयालाल जैन दमोह (म.प्र.), चौथमल भण्डारी, उज्जैन (म.प्र.), भूपाल पंडित, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश), भारमल, कोल्हापुर (महाराष्ट्र), हरिश्चन्द्र दगडोवा, परभणी (महाराष्ट्र) आदि ।

अमर शहीद सिंघई प्रेमचन्द जैन
दमोह (म.प्र.),

अमर शहीद अण्णा साहेब पन्नावाले का
सांगली (महाराष्ट्र), स्थित स्टेच्यू

जैन क्रान्तिकारी

जैन क्रान्तिकारियों में श्री अर्जुन लाल सेटी (जयपुर), राजस्थान,विमल प्रसाद जैन, दिल्ली राजू ताई, सांगली (महाराष्ट्र), श्रीमती अंगूरी देवी,आगरा (उ.प्र.), मोती लाल तेजावत, उदयपुर (राजस्थान), लीलाल बहन और रमा बहन (गुजरात) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं ।

श्री अर्जुन लाल सेटी (जयपुर)

क्रान्ति कन्या राजू ताई (सांगली)

श्रीमती अंगूरी देवी (आगरा)

श्री विमल प्रसाद जैन (दिल्ली)

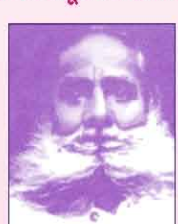

श्री मोतीलाल तेजावर (उदयपुर)

विदेशों में जैन साहित्य

1. लंदन स्थित अनेक पुस्तकालयों में अनेक भारतीय ग्रन्थ विद्यमान हैं, जिनमें से एक पुस्तकालय में तो लगभग 1500 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं और अधिकतर ग्रन्थ प्राकृत–संस्कृत भाषा में हैं और जैनधर्म से सम्बन्धित हैं।
2. जर्मनी में लगभग 5 हजार पुस्तकालय हैं। इनमें से बर्लिन के एक पुस्तकालय में 12 हजार भारतीय ग्रन्थ हैं, जिनमें अधिकतर जैन ग्रन्थ हैं।
3. अमेरिका के वाशिंगटन और बोस्टन नगर में 500 अधिक से अधिक पुस्तकालय हैं। इनमें लगभग 40 लाख पुस्तकें हैं, जिनमें से जैन ग्रन्थ सहित 20 पुस्तकें प्राकृत–संस्कृत भाषा में हैं, जो कि भारत से भेजी गई हैं।
4. फ्रांस में 1100 से अधिक पुस्तकालय हैं, जिनमें पेरिस के बिब्लियोथिक नाम के पुस्तकालय में 40 लाख पुस्तकें हैं, जिनमें से 12 हजार संस्कृत और प्राकृत भाषा में लिखीं जैन पुस्तकें और ग्रन्थ हैं।
5. रूस में 1600 बड़े पुस्तकालय हैं। इनमें से एक राष्ट्रीय पुस्तकालय भी है, जिसमें 5 लाख पुस्तकें हैं। उनमें 22 हजार जैन ग्रन्थ हैं।
6. इटली में लगभग 4500 पुस्तकालय हैं। इनमें लाखों पुस्तकों और ग्रन्थों का संग्रह है। इनमें भारत से गई हुई 40000 पुस्तकें हैं, जो कि जैन और हिन्दू धर्म पर आधारित हैं।
7. नेपाल के काठमांडू स्थित पुस्तकालयों में जैन प्राकृत और संस्कृत ग्रन्थ विद्यमान हैं।
8. इसी प्रकार चीन, तिब्बत, ब्रहा, इण्डोनेशिया, जापान, मंगोलिया, कोरिया, तुर्की, ईरान, असीरिया, काबुल आदि के पुस्तकालयों में बड़ी संख्या में जैन ग्रन्थ विद्यमान हैं।

भारत से विदेशों में जैन ग्रन्थ ले जाने की प्रवृत्ति सैकड़ों सालों से चली आ रही है। विक्रम की पांचवी शती में चीनी यात्री फाह्यान भारत में आया था और यहां ताड़पत्रों पर लिखी हुई 1520 पुस्तकें चीन ले गया था।

विक्रम की दूसरी शती में चीनी यात्री हुएनसांग भारत आया और पहली बार 1550 पुस्तकें, दूसरी बार 2175 पुस्तकें, तीसरी बार 464 ईस्वी सन् में 2550 ताड़पत्रों को अपने साथ चीन गया।

इस प्रकार हजारों वर्षों में सैकड़ों विदेशी हमारे देश से जैन ग्रन्थ अपने देश ले गये और भारत में ही जैन धर्म के द्वेषियों ने हजारों ग्रन्थों जलाकर नष्ट करवा दिया।

यह है हमारी साहित्य की अनमोल विरासत जो हमारे मुनिराजों और ज्ञानियों ने लिखी थी। हजारों ग्रन्थ विदेश जाने और नष्ट होने के बावजूद आज हजारों ग्रन्थ हमारे पास उपलब्ध हैं।

प्रतिभा परिचय

जिनम् सेठी

स्वस्ति सेठी

इनसे मिलिये। ये हैं जयपुर निवासी 5 वर्षीय जिनम् सेठी और 12 वर्षीय स्वस्ति सेठी। श्री संजय सेठी और श्रीमति ज्योति सेठी के ये दोनों पुत्र-पुत्री बचपन से ही अत्यंत होनहार हैं। दोनों जिनधर्म के अनुसार आचरण करने का प्रयास करते हैं। प्रतिदिन देव दर्शन, रात्रि भोजन त्याग, आलू-प्याज आदि जमीकंद का त्याग जैसे कई कठिन नियमों का ये आसानी से पालन कर रहे हैं। साथ ही बाजार की बिस्किट और टॉफी आदि का भी त्याग किया है।

इन नियमों के साथ ही वे नियमित रूप से पाठ्याला जाते हैं। इन्हें अनेक स्तुति, बाल गीत-भजन, समयसार जैसे परमागम की कुछ गाथायें याद हैं। स्वभाव से शांत ये दोनों भाई - बहिन सेठी परिवार के गौरव में वृद्धि कर रहे हैं। हम इनके मंगलमय भविष्य की सुखद कामना करते हैं।

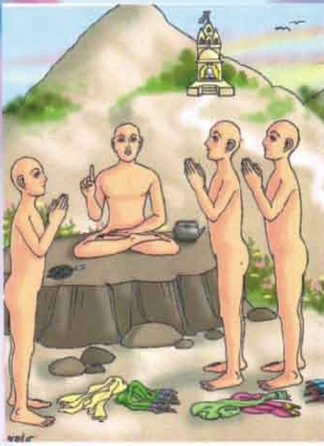

रक्षा बंधन भाई-बहिन का नहीं मुनिराजों का पर्व है

दोस्तो! 2 अगस्त को रक्षा बंधन पर्व आ रहा है। आपको मालूम ही होगा कि रक्षा बंधन के दिन आचार्य अकंपन और उनके सात सौ मुनियों के संघ पर किया गया उपसर्ग दूर हुआ था। हस्तिनापुर के चार मंत्री बलि, नमुचि, प्रहलाद और बृहस्पति ने पहले के बैर के कारण आचार्य अकंपन आदि सात सौ मुनिराजों पर घोर उपसर्ग किया। जिस स्थान पर वे रुके हुये थे उनके चारों ओर हरी घास उगा दी, बड़ा यज्ञ रचाया, पशुओं की बलि दी जिससे मुनिराजों का आहार लेना बंद हो गया, यज्ञ के धुयें के कारण मुनिराजों के गले बंद हो गये। परन्तु समस्त मुनिराज अपने ध्यान में लीन रहे। मुनिराजों पर उपसर्ग देखकर सारी प्रजा ने भी भोजन का त्याग कर दिया। तब विष्णुकुमार मुनिराज ने इन मुनिराजों का उपसर्ग दूर किया। मुनिराजों की रक्षा होने के कारण इस दिन हस्तिनापुर के निवासियों परस्पर साधर्मियों को रक्षा सूत्र बांधकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस दिन से रक्षा बंधन पर्व प्रारंभ हो गया।

परन्तु आज सारे समाज में मुनिराजों को भूलकर यह पर्व मात्र भैया-बहिन के नाम समर्पित हो गया है। यदि भाई बहिन से राखी नहीं बंधवा पाता है तो बहन भाई पर बहुत क्रोध करती है। भाई भी अपनी बहिन को उपहार देकर उसे प्रसन्न रखना चाहता है। बहिनें भी कई दिन पहले से ही अपने भाई के लिये राखी और अन्य वस्तुयें खरीद लेती हैं। विवाहित बहिनें रक्षाबंधन पर अपने मायके जाने के लिये तैयार रहती हैं अथवा

अपने भाई की प्रतीक्षा करती हैं। भाईयों को ग्रीटिंग भेजी जाती हैं। कुल मिलाकर यह मुनिराजों का महान पर्व भाई–बहिन का पर्व हो गया है। इस आयोजन में मुनिराजों को कोई याद भी नहीं कर पाता। यदि कुछ धार्मिक व्यक्ति याद भी करते हैं तो सुबह पूजन करके अपने कर्तव्य का पूरा कर लेते हैं।

इस दिन क्या करें –

1. रक्षा बंधन अर्थात् श्रावण माह की पूर्णिमा के आठ दिन पूर्व मुनिराजों पर भयंकर उपसर्ग हुआ था, आप आठ दिन पहले से ही इन मुनिराजों के स्मरण स्वरूप अपनी भोजन में प्रिय वस्तु का त्याग करें। इस वर्ष 25 जुलाई से ही आप कोई एक नियम अवश्य ले लें।
2. प्रतिदिन रात्रि को सोने के पूर्व आचार्य अकंपन आदि मुनिराजों को स्मरण करके वंदना करें।
3. प्रतिदिन जिनमंदिर जाकर भी मुनिराजों की पूजन अथवा भक्ति अवश्य करें।
4. सामाजिक स्तर पर प्रतिदिन स्तुति, वैराग्यपाठ, भजन आदि का सामूहिक पाठ किया जाये।
5. रक्षा बंधन के दिन प्रातः आचार्य अकंपन आदि सात सौ मुनिराजों की पूजन करके सभी साधर्मी आपस में रक्षा सूत्र बांधकर ये भावना भायें कि पवित्र मुनिराजों पर कभी उपसर्ग नहीं आये।
6. बहिनें भी अपने भाई को रक्षा सूत्र बांधते समय उनसे उपहार के साथ एक धार्मिक लेने की भावना व्यक्त करें। जैसे प्रतिदिन देव दर्शन, रात्रि भोजन का त्याग आदि।
7. भाई भी बहिन को स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा दिलायें।

इस तरह का रक्षा बंधन इस महान पर्व को गरिमा और श्रेष्ठता प्रदान करेगा।

वेश का महत्व

रावण ने छल से राम की पत्नी सीता का हरण कर लिया। सीता को अशोक वाटिका में रखा गया। उन्हें सर्व सुविधायें प्रदान की गईं। परन्तु राम के वियोग में सीता अत्यंत दुःखी थी। रावण सीता को अपनी पत्नी बनाना चाहता था। उसने सारे उपाय कर लिये लेकिन पतिव्रता सीता ने रावण की बात नहीं मानी। रावण सीता के मिलने से बहुत दुःखी रहने लगा। रावण को दुःखी देखकर उसकी पत्नी मंदोदरी ने पूछा – हे स्वामी! आप इतने दुःखी क्यों हैं ? रावण ने कहा – मैंने सीता को अपनाने के लिये सारे उपाय कर लिये परन्तु सीता मेरी बात नहीं मानती। वह राम के ही गीत गाती रहती है। तब मंदोदरी ने सुझाव दिया कि स्वामी! एक बहुत बढ़िया उपाय है मेरे पास। रावण ने उत्सुकता से पूछा कि देवी! शीघ्र कहो। मंदोदरी ने कहा – आपको तो बहुरूपिणी विद्या सिद्ध है, जिससे आप मनचाहा रूप बना सकते हैं, आप राम का रूप बनाकर सीता से निवेदन कीजिये वह अवश्य मान जायेगी।

रावण उदास होकर बोला – मैंने यह उपाय भी करके देख लिया। परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ।

मंदोदरी ने आश्चर्य से पूछा – क्यों ? रावण बोला – मैंने जैसे ही राम का रूप बनाया वैसे ही मेरे मन में परस्त्रीसेवन के परिणाम ही समाप्त हो गये। मेरे सारे गंदे परिणाम समाप्त हो गये।

ऐसे ही हम एक बार अपने आपको आत्मा स्वीकार कर लें तो हमारे मन से राग–द्वेष के परिणाम अपने आप समाप्त हो जायें।

शीलवान लक्ष्मण

वन में रावण ने सीता का हरण कर लिया और आकाश मार्ग से विमान द्वारा जाने लगा। सीता बचने के लिये बहुत चिल्लाई परन्तु उस वन में उसकी पुकार कौन सुनता! सीता ने जो थोड़े आभूषण पहने थे वह अलग – अलग स्थानों पर फेंक दिये। बाद में हनुमान की सेना को वे आभूषण मिले तो वे इनकी पहचान कराने के लिये राम के पास लेकर आये। गले का हार, कानों के कुण्डल और हाथों की चूड़ी देखकर लक्ष्मण समझ नहीं पाये कि ये आभूषण किसके हैं ? जब उन्हें पैरों के आभूषण दिखाये गये तो वे तुरन्त बोले – हाँ ! ये आभूषण तो सीता माता के हैं। यह सुनकर सभी आश्चर्यचकित हो गये तब राम ने पूछा– लक्ष्मण! ये सारे आभूषण सीता के ही हैं तो तुम पैरों के आभूषण देखकर ही क्यों पहचान पाये? लक्ष्मण ने शांति से कहा कि भ्राताश्री! मैं प्रतिदिन सीता माता के चरण स्पर्श करता था, इसलिये उनके पैरों के आभूषणों से परिचित था। मैंने आज तक सीता माता को सिर उठाकर नहीं देखा इसलिये उनके अन्य आभूषण नहीं पहचान सका। राम और अन्य लोग लक्ष्मण की विनय और शील को देखकर बहुत प्रशंसा करने लगे। ऐसा होता है शील और परिवार की मर्यादायें।

परिणामों की विचित्रता

मैं दिनांक 12 मई को बीना के संस्कार शिविर से सहभागिता करके सागर जा रहा था। मैं ट्रेन में अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। मेरी सीट खिड़की के पास थी तो बाहर के समस्त दृश्य दिख रहे थे। बहुत तेज गर्मी थी। पटरियों से गर्माहट निकल रही थी, तभी दो छोटे–छोटे बच्चे सामने से निकले। उनमें से एक के हाथ में एक पानी से भरी हुई पोलिथिन थी। मैंने देखा कि उस पोलिथिन में एक मछली तैर रही थी। पानी बहुत गंदा था। मछली बाहर निकलने के लिये तड़प रही थी। तभी दूसरे बच्चे ने अपने दोस्त से वह पोलिथिन लेकर उसका पूरा पानी पटरी पर फेंक दिया और मछली को पीछे से पकड़ गर्म पटरी पर डाल दिया। गर्म पटरी पर गिरते ही मछली तड़प उठी। वह उछलने लगी। उसकी यह हालत देखकर मुझे बहुत पीड़ा हुई। सोचा कि उस बच्चे को चिल्लाकर उसे बचाने के लिये कहूं, पर इतने में ट्रेन चल पड़ी। मैं सोचता ही रह गया।

ट्रेन अपने अगले स्टॉप बघौरा रेल्वे स्टेशन पर खड़ी हुई। धूप बहुत होने से गर्मी से लोगों का बुरा हाल हो रहा था। स्टेशन पर पानी उपलब्ध नहीं था। लोग पानी की तलाश में परेशान हो रहे थे। तभी कुछ बच्चे अलग–अलग टोलियों में आये। उनकी उम्र लगभग 7–8 वर्ष होगी। हर टोली में एक बाल्टी पानी और एक मग था। वे आवाज लगा रहे थे – लो ठंडा पानी। वे बिना किसी स्वार्थ के लोगों को पानी पिलाने लगे। उनकी फुर्ती देखने लायक थी। जैसे ही बाल्टी में पानी खत्म हो जाता वे स्टेशन की दीवार फांदकर बाहर के हैण्डपम्प से फिर पानी भर लाते। प्यासे यात्रियों के लिये ये कोई आश्चर्य से कम नहीं नहीं था। उनका बच्चों को उत्साह देखने लायक था। उनसे किसी ने यह कार्य करने के लिये नहीं कहा परन्तु उनके ह्रदय की मानवता और दया के परिणाम उन्हें इस कार्य की प्रेरणा दे रहे थे। आपने दो सत्य घटनायें पढ़ीं। देखी! परिणामों की विचित्रता! – **विराग शास्त्री**

जबलपुर में तृतीय आवासीय
बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा आयोजित तृतीय बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न हुआ। इस शिविर का आयोजन स्थानीय ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल में दिनांक 1 मई से 8 मई तक किया गया। इस शिविर में जबलपुर एवं आसपास के उपनगरों के लगभग 535 बालक–बालिकाओं ने सहभागिता की।

दैनिक कार्यक्रम प्रातः प्रार्थना और योग से प्रारंभ होते थे। उसके पश्चात् पूजन –प्रशिक्षण के द्वारा शिविरार्थियों को पूजन का महत्व और विधि समझाई गई। प्रातः 9 बजे से सामूहिक कक्षा का संचालन श्री विराग शास्त्री द्वारा किया गया। इसके पश्चात् आयु वर्ग के अनुसार कक्षाओं का संचालन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन आमंत्रित विद्वानों श्री अभय शास्त्री खैरागढ़, श्री सुदीप शास्त्री बरगी, श्री विकास छाबड़ा, श्री निपुण शास्त्री सरदार शहर, श्री विवेक शास्त्री सागर, श्री सुमित शास्त्री छिन्दवाड़ा, श्री अभिनय शास्त्री जबलपुर, श्री गौरव शास्त्री बड़ौत, श्रीमति श्रुति जैन खैरागढ़, श्रीमति स्वस्ति विराग जैन के साथ स्थानीय विद्वानों श्री मनोज जैन, श्री श्रेणिक जैन, श्री जिनेन्द्र जैन, श्रीमति कांति जैन, श्रीमति अल्का जैन, श्रीमति पूजा जैन, श्रीमति आरती जैन, श्रीमति कल्पना जैन, श्रीमति श्रद्धा जैन द्वारा किया गया। इस तरह कुल 13 कक्षाओं का संचालन किया गया। साथ ही प्रौढ़ – युवा वर्ग के लिये प्रातः श्री अभय शास्त्री, खैरागढ़ द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर तथा रात्रि में श्री गौरव शास्त्री द्वारा समयसार ग्रन्थ पर कक्षा का लाभ प्राप्त हुआ।

इस शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री बाबूलाल रजनेश कुमार जैन, रूपाली परिवार जबलपुर थे। इस शिविर में श्री वीतराग विज्ञान मंडल, महिला मंडल, चेतना मंडल का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। श्री मनोज ताम्रकार और उनके सहयोगियों ने पूर्ण समर्पण भाव से सहयोग किया। 8 मई को भव्य समापन समारोहपूर्वक विशेष पुरस्कार वितरण के साथ किया गया । प्रत्येक शिविरार्थी को श्री बाबूलाल रजनेश कुमार जैन और श्री प्रसन्नकुमार जैन द्वारा बालकों की नई सी.डी. 'शेर बना भगवान' और 'पाठशाला चलें हम' वितरित की गई। विशेष बात यह रही कि समापन समारोह में आगामी पांच वर्षों के शिविर आमंत्रणकर्ताओं की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन विराग शास्त्री ने किया।

जीवन एक गणित है, इसमें दोस्तों को जोड़िये, दुश्मनों को घटाइये और विश्वास का गुणा कीजिये तो जिंदगी पूर्णांक बन जायेगी ।

पूरे देश में बाल संस्कार शिविरों की धूम

बाल शिविरों के इतिहास में सन् 2012 में आयोजित शिविरों ने इतिहास रचा है। पहली बार इतने विशाल स्तर पर शिविरों का आयोजन हुआ। 200 से अधिक विद्वानों ने इन शिविरों में अध्यापक के रूप में अपनी सेवायें दीं और हजारों बच्चों ने जिनवाणी को समझने का प्रयास किया और लगभग सभी बच्चों ने अपने आचरण को पवित्र करने के लिये नियम लिये। हमें निम्न स्थानों पर शिविर संपन्न होने की सूचना प्राप्त हुई है।

1. महाराष्ट्र में – देवलाली जि. नासिक, पंढरपुर, हिंगोली, नागपुर,
2. मध्यप्रदेश – जबलपुर, खंडवा, इंदौर, बीना, खड़ैरी दमोह, गुना, सिद्धायतन द्रोणगिर, ग्वालियर,उज्जैन, सागर
   - सामूहिक संस्कार शिविर 35 स्थानोंपर केन्द्र – मालवा
   - सामूहिक संस्कार शिविर 100 स्थानों पर केन्द्र
     भिण्ड, सागर, आगामी शिविर –करेली (दिसम्बर माह में)
3. राजस्थान – कोटा, उदयपुर, अजमेर, अलवर,
4. गुजरात – चिन्तामणि पार्श्वनाथ, चैतन्य धाम,
5. उत्तरप्रदेश – करहल जि.मैनपुरी, सामूहिक संस्कार शिविर 35 स्थानों पर केन्द्र– बड़ौत, सामूहिक संस्कार शिविर 5 स्थानों पर केन्द्र – फिरोजाबाद
6. कर्नाटक – बेलगाम। 7. छत्तीसगढ़ – खैरागढ़।

चहकती चेतना के परिवार में सदस्यों की अभूतपूर्व वृद्धि

पत्रिका के संपादक श्री विराग शास्त्री के सक्रिय प्रयासों पत्रिका के सदस्यों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। विराग शास्त्री ने जिनवाणी प्रभावना के लक्ष्य से देवलाली, जबलपुर, खड़ैरी, बीना, सागर, करहल (उ.प्र.), ग्वालियर में आयोजित बाल संस्कार शिविरों और अन्य आयोजनों में सहभागिता की। सभी स्थानों पर चहकती चेतना की पत्रिका की सदस्यता हेतु सूचना दी इससे उत्साहित होकर अनेक साधर्मियों ने पत्रिका की सदस्यता स्वीकार की। साथ ही प्रत्येक स्थान पर बाल गीत और संस्कार प्रेरक सी.डी. का वितरण किया गया।

विराग शास्त्री का संपर्क सूत्र बदला

पत्रिका के संपादक विराग शास्त्री पारिवारिक कारणों से अपने गृह नगर जबलपुर वापस आ गये हैं। अब चहकती चेतना पत्रिका, वीडियो सी.डी. अथवा अन्य धार्मिक आयोजनों के लिये आप निम्न पते पर संपर्क करें।

विराग शास्त्री सर्वोदय, 702,जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास,फूटाताल जबलपुर 482002 म.प्र. मोबा. नं. 9300642434 chehaktichetna@yahoo.com

करहल उ.प्र. में प्रथम आवासीय

बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन करहल जि. मैनपुरी द्वारा आयोजित प्रथम आवासीय बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न हुआ। इस शिविर का आयोजन दिनांक 20 मई से 27 मई तक स्थानीय नसियाजी में किया गया। इस शिविर में करहल के आसपास के लगभग 18 गांवों के लगभग 550 बालक–बालिकाओं ने सहभागिता की। इस शिविर का आयोजन में स्व. धनेशचंद जैन की स्मृति में उनके परिवार श्रीमति मीनारानी सिंघई आलोक जैन परिवार के मुख्य सहयोग से किया गया।

श्रुत पंचमी पर्व पर विशेष रूप से श्री श्रुतस्कंध विधान का आयोजन श्री विराग शास्त्री और श्री ऋषभ जैन, घिरोर के निर्देशन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के पश्चात् जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

समापन समारोह चहकती चेतना के परम संरक्षक श्री प्रेमचन्दजी जैन बजाज, कोटा के मुख्य आतिथ्य में किया गया। श्री सौरभ शास्त्री, फिरोजाबाद की ओर से 20 प्रतिभाशाली बालक– बालिकाओं को चहकती चेतना की सदस्यता भेंट स्वरूप प्रदान की गई। कार्यक्रम की सफलता में श्री विकास शास्त्री, इंदौर, श्री विपिन शास्त्री फिरोजाबाद, श्री अनुराज शास्त्री फिरोजाबाद का विशेष सहयोग रहा है। फैडरेशन के सभी सदस्यों का पूर्ण समर्पण प्राप्त हुआ।

देवलाली में तृतीय आवासीय बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मुम्बई द्वारा आयोजित पन्द्रहवां बाल संस्कार शिविर सानंद संपन्न हुआ। इस शिविर का आयोजन दिनांक 25 अप्रेल से 2 मई तक किया गया। इस शिविर में मुम्बई एवं अन्य स्थानों से लगभग 430 बालक–बालिकाओं ने सहभागिता की।

दैनिक कार्यक्रम प्रातः प्रार्थना और योग से प्रारंभ होते थे। उसके पश्चात् पूजन –प्रशिक्षण के द्वारा शिविरार्थियों को पूजन का महत्व और विधि समझाई गई। प्रातः 9 बजे से सामूहिक कक्षा का संचालन श्री विराग शास्त्री द्वारा किया गया। इसके पश्चात् आयु वर्ग के अनुसार कक्षाओं का संचालन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन आमंत्रित विद्वानों श्री बाबूभाई मेहता फतेपुर, श्री विराग शास्त्री, श्री विकास छाबड़ा, श्री आशीष शास्त्री टीकमगढ़, श्री जितेन्द्र शास्त्री छिन्दवाड़ा, श्री विवेक शास्त्री सागर, श्री अनिल भाई दहीसर, ब्र. चेतना बेन देवलाली, श्रीमति स्वस्ति विराग जैन, कु.जीनल शाह द्वारा किया गया। साथ ही कार्यकताओं के लिये पंडित बाबूभाई मेहता ने विशेष कक्षा ली।

इस शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमति बालूबेन प्रभुदास कामदार परिवार दिल्ली–मुम्बई था तथा सहयोगी श्रीमती मीताबेन शैलेष भाई शाह मुंबई एवं श्री कुंदकुंद कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुंबई थे। श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई जोबालिया ने पूर्ण समर्पण भाव से कार्यक्रम सफल बनाने में अपना योगदान किया।

जन्म दिवस

यदि आप भी जन्म दिवस की फोटो सहित शुभकामनायें प्रकाशित करवाना चाहते है तो मात्र 100/- और फोटो भेजें आप यह राशि चहकती चेतना के नाम चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें ।

''अपेक्षा'' प्यारी सी बेटी हो, हो सीता आदर्श।
शील, प्रेम और धर्म से, पद पाओ उत्कृष्ट।।

अपेक्षा जैन / अजय कर्नावट, जावरा 17.08.12

''कैवल्य'' ज्ञान में झलक रहे, तीन काल त्रय लोक।
जन्म - मरण का नाश हो, पाओ आतम लोक।।

कैवल्य मलय शाह, रतलाम म.प्र. 25.08.12

जैन धर्म मंगल मिला, जानो इसका अर्थ।
विनय, विवेक और प्रेम से, पाना प्यार ''समर्थ''।।

समर्थ / डॉ. राजेश सोनी,रतलाम म.प्र. 08.08.12

''विपुल'' आपका नाम है, करना विपुल सा काम।
सिद्ध समान स्वभाव है, मिले मुक्ति वरदान।।

विपुल जैन / श्री राजेश, ग्वालियर म.प्र. 15.08.12

जिनवाणी शीतल करे, संबल देतीं महान।
जिनवाणी स्वाध्याय से, ''आशय'' बनो महान।।

आशय/ शीतलचन्द जैन, ग्वालियर 26.08.1995

जिनवाणी ''वंशी'' बजे, हो हरक्षण मुस्कान।
यही भावना जन्मदिवस पर, पाना आतम महान।।

Vanshi Kalpesh Shah, Malad, MUMBAI 20.08.2003

''अभिनव'' अपना धर्म है, अभिनव बनो महान।
दया, क्षमा, विश्वास रख, हो जीवन निष्काम।।

अभिनव / अतुल जैन, ग्वालियर 01.08.1997

जैन धर्म की नारियाँ, हैं हमारी शान।
मानसी ये आदर्श हों, मिले मान सन्मान।।

मानसी जैन / सुरेश जैन उदयपुर, राज. 08.09.12

जन्म दिवस

जैन धर्म गौरव बनो, रखना इसका मान।
सदाचरण और न्याय से, पाना स्नेह ''प्रियांक''।।

प्रियांक / भरत जैन, उदयपुर 18.09.12

''आगम'' ही तो शरण है, आगम से भव पार।
आगम से भव विजय हो, हो सबका उद्धार।।

आगम / विजय जैन, उदयपुर 2.09.12

''भाविका'' जीवन में रहे, जिनभक्ति गुणगान।
हो पवित्रता जीवन में तो, मिले सकल वरदान।।

भाविका / भावेश जैन, UDAIPUR 27-09-12

आतम ''अनुभव'' ही लोक में, एक मात्र है काम।
आज यही संकल्प लो, पाओ मुक्ति धाम।।

अनुभव /शीतलचन्द जैन, ग्वालियर 24.09.92

''तरन'' जिनेन्द्र ही शरण हैं, लो इनका ही नाम।
देश हो परदेश हो, वन्दों जिनेन्द्र भगवान।।

तरन राहुल कीनी, अमेरिका 09.06.2012

''ध्रुव'' तो अपना आत्मा, है नश्वर संसार।
ध्रुव ही अपना धर्म है, करलो भव को पार।।

ध्रुव संदेश शहा, बारामती महा. 22 मार्च 2012

''शाश्वत'' अपना रूप है, मैं शुद्धात्म अनूप।
सकल स्वांग का त्यागकर, हे मुक्ति के दूत।।

शाश्वत शुद्धात्म जैन, ग्वालियर 12.7.2012

युग युग से हम भटक रहे, निज सिद्धातम भूल !
अपना आतम जानिये, पाओ सम्यक् फूल ।

युग जैन, रतलाम 1.5.2012

शुद्धातम की महक ही, काटे भव दुर्गन्ध ।
जन्मदिवस पर यही भावना, मिटें कर्म के बंध ।।

महक शाह, अहमदाबाद 22.8.2012

उत्तम संयम धर्म

आज का दिन कितना पवित्र है। भगवान महावीर को वैराग्य हुआ है। चलो पालकी में बैठा कर उन्हें वन में ले चलें।
हां हां चलिये।
स्वर्ग से इन्द्र व देवता लोग कुंडलपुर आ गये और जब पालकी में भगवान को विराजमान करके पालकी उठाने लगे तब...
पालकी आप कैसे उठायेंगे! भगवान महावीर हमारी तरह मनुष्य ही हैं। अतः पालकी पहले हम उठायेंगे।
पालकी पहले उठाने का अधिकार हमारा है। हमने ही भगवान के गर्भ में आने से पहले रत्न बरसाये, हमने ही पांडुक शिला पर ले जाकर इनका जन्माभिषेक किया। अब तुम कैसे कहते हो कि पालकी हम नहीं उठा सकते।
मनुष्य और देवों में झगड़ा हुआ न्याय एक वृद्ध पुरूष को सौंपा गया।
भगवान हमारी ही तरह मनुष्य है। हमारी ही तरह माता के गर्भ से आये। हमारी ही तरह इनका जन्म हुआ। फिर ये बीच में देवता कहां से आ टपके?
आज भगवान को वैराग्य हुआ है। पालकी में बैठाकर भगवान को बन में ले जाने का अधिकार हमारा है! क्यों कि हमी ने इनके गर्भ कल्याण व जन्म कल्याणक मनाये।
भैया! दलीलें तुम दोनों की ही मजबूत है। मैंने बहुत विचार करने के बाद यही निर्णय किया है कि पहले पालकी वही उठाये जो इन जैसा बनने में सामर्थ हो!

हे मनुष्यो ! यहां हम लाचार हैं। हम इनकी भूख लगती है। कंठ से अमृत भर जाता है
तरह संयम धारण कर ही नहीं सकते। हमें इसी प्रकार और इन्द्रियों के विषयों की इच्छा होते ही तृप्ति हो जाती है। हम इच्छाओं को रोक ही नहीं सकते। पूर्ण संयम तो तिर्यञ्चों में भी नहीं है। नारकियों की तो बात ही क्या। इन जैसा तो आप ही बन सकते हो।
बस तो निर्णय के अनुसार हम मनुष्य ही पालकी को सर्वप्रथम उठाने के अधिकारी हुए न ?
भैया। ठीक है। अधिकारी तो तुम ही हो ! परन्तु मैं तुम्हारे सामने झोली पसारता हूं! कुछ क्षणों के लिये मुझे मनुष्य पर्याय दे दो! बदले में चाहे मेरा सारा वैभव ले लो।
कोई किसी को अपनी पर्याय देने में समर्थ है ही नहीं। तुम तो अब यही भावना भाओ कि अगले भव में मनुष्य बने। भगवान की तरह मुनि दीक्षा ले कर आत्म कल्याण के पथ पर बढ़ते हुए मुक्ति प्राप्त करें। क्यों कि बिना संयम के मुक्ति नहीं और बिना मनुष्य हुए पूर्ण संयम नहीं।
हम अपनी हार स्वीकार करते हैं। उठाओ। पहले तुम्हीं पालकी उठाओ। तुम महान पुण्यशाली हो जो मनुष्य बने।
देखो रे मनुष्यों, तुम्हें वह मनुष्य भव मिला है। जिसके लिये इन्द्र भी तरस रहा है। ऐसे अमूल्य नर जन्म को पाकर भी तुमने इन्द्रिय संयम व प्राणि संयम का पालन नहीं किया तो फिर संसार चक्र में घूमते ही रहोगे, फिर यह नर जन्म मिलना उतना ही कठिन होगा जैसे समुद्र में फेंका रत्न। संयम धारण करने में देरी न करो। क्यो कि देखो न तीर्थंकर होते हुए भी भगवान महावीर मुक्ति प्राप्त करने के लिए संयम अङ्गीकार करने जा रहे है।

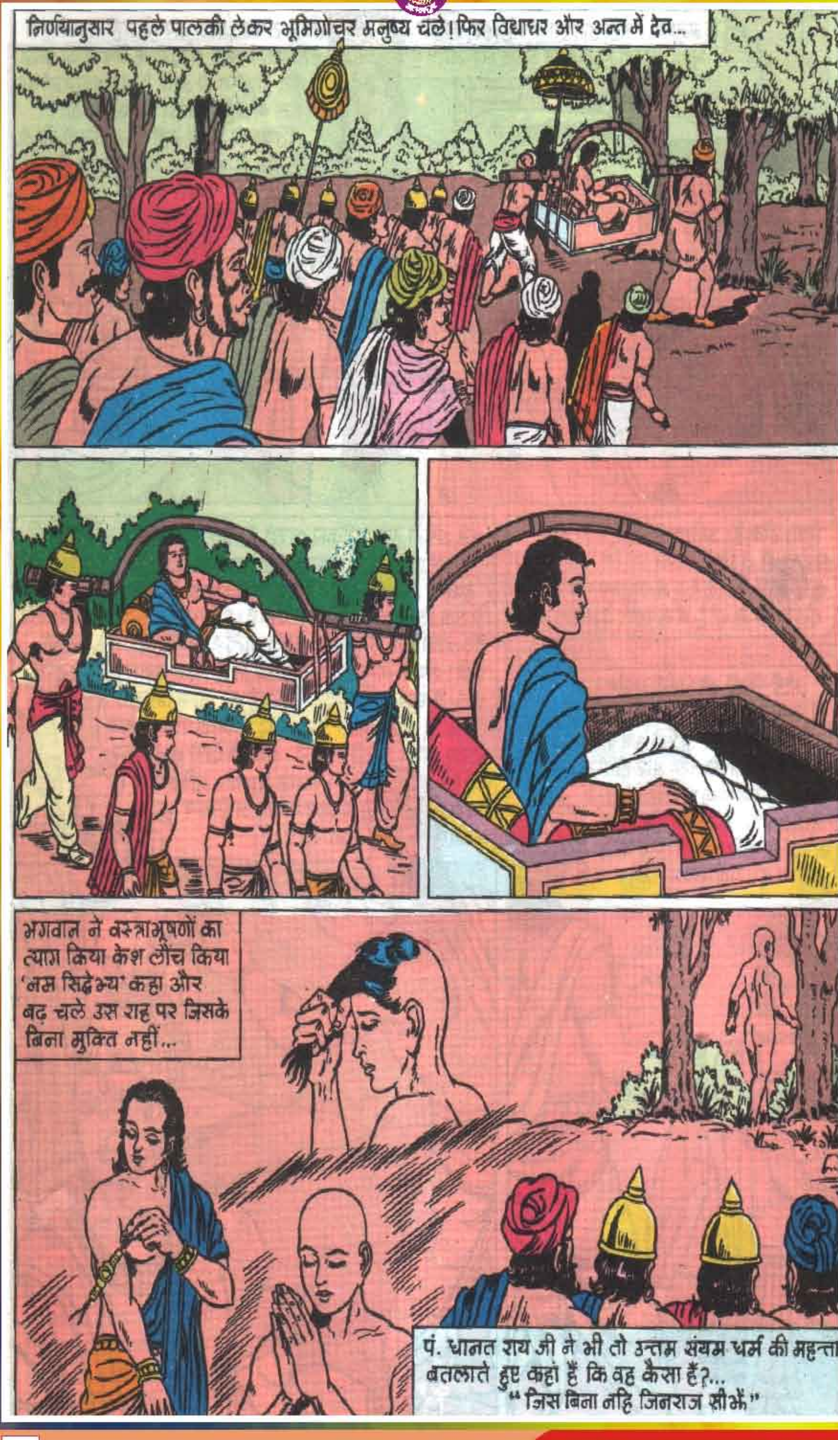
निर्णयानुसार पहले पालकी लेकर भूमिगोचर मनुष्य चले। फिर विद्याधर और अन्त में देव...
भगवान ने वस्त्राभूषणों का त्याग किया केश लौंच किया 'नम सिद्धेभ्य' कहा और बढ़ चले उस राह पर जिसके बिना मुक्ति नहीं...
पं. धानत राय जी ने भी तो उत्तम संयम धर्म की महत्ता बतलाते हुए कहां हैं कि वह कैसा हैं?...
"जिस बिना नहि जिनराज सीझैं"

अब एक फोन लगाइये और
घर बैठे सी.डी. पाइये

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा विगत 12 वर्षों से बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रेरक सामग्री का निर्माण कर रहा है। इस कम में अब तक बाल गीतों, पूजन, जिनधर्म की कहानियां, एनीमेशन आदि की 15 वीडियो सी.डी. तैयार की गईं हैं। साथ दो धार्मिक कविताओं की पुस्तक, एक कथा की पुस्तक, दो गेम भी तैयार किये हैं। अन्य योजनाओं पर कार्य चल रहा है।

हमारी संस्था के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रत्येक स्थान पर सी.डी. लेकर पहुंचना संभव नहीं है और पूरे देश के अनेक साधर्मी किसी बड़े धार्मिक कार्यक्रम के अवसर पर ही यह सामग्री प्राप्त कर पाते हैं। हमने आप तक सी.डी. एवं अन्य सामग्री पहुंचाने के लिये के लिये दो योजनायें तैयार की हैं।

पहली योजना में आप हमारे मोबाइल नम्बर पर हमें संपर्क करें, हम आपको आपके द्वारा मांगी गईं सी.डी. तुरन्त भेज देंगे और आप सी.डी. की राशि का भुगतान हमारे बैंक खाते में अपने नजदीकी बैंक शाखा में कर सकते हैं। तो देर किस बात की ? मोबाइल उठाइये और हमसे बात करके पाइये संस्था द्वारा तैयार सी.डी. और साहित्य।

दूसरी योजना के अंतर्गत आप हमारी संस्था के स्थायी सदस्य बन सकते हैं। स्थायी सदस्यता के लिये आपको 5000/- रु. की राशि जमा करना होगा। इसके अंतर्गत आपको 15 वर्षों तक ''चहकती चेतना'' पत्रिका प्राप्त होगी। साथ ही संस्था द्वारा अब तक तैयार समस्त सामग्री आपको भेजी जायेगी तथा आगामी 15 वर्षों में निर्मित होने वाली समस्त सामग्री आपको निःशुल्क भेजी जायेगी। तो देर मत कीजिये। बार-बार सी.डी. मंगाने और सदस्यता शुल्क भरने की झंझट से मुक्ति पाइये।

संपर्क सूत्र

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684, E-mail : chehaktichetna@yahoo.com

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा तैयार
नई वीडियो सी.डी. आप घर बैठे प्राप्त करें

ग्यारहवां पुष्प

पाठशाला चलें हम
(नये धार्मिक गीतों का संकलन)

बारहवां पुष्प

तुम्हें वीर बनना है
(सुपर हिट गीतों का संकलन)

तेरहवां पुष्प

आओ सीखें जैन धर्म
(तीर्थंकरों और नवदेवताओं का परिचय कराने वाला वीडियो)

चौदहवां पुष्प

शेर बना महावीर
(एनीमेशन वीडियो और रंगीन चित्र सहित पुस्तक)

निर्देशन
विराग शास्त्री, जबलपुर

वितरक
वैशाली कैसेट्स, इंदौर

जन्म दिन, प्रभावना, शिविर आदि प्रसंग पर
वितरण के लिये विशेष छूट पर उपलब्ध

– संपर्क –

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com